

सौभाग्य जीवन के लाभदायक उपाय

लेखक

अल्लामा अब्दुर्रहमान अस-सअ्दी

अनुवाद

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

संशोधन

मुहम्मद ताहिर हनीफ

www. **islamhouse** .com

1428-2007

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

लेखक का प्राक्कथन

الحمد لله الذي له الحمد كله، وأشهد أن لا إله إلا
الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده
ورسوله، صلى الله عليه وعلى آله وأصحابه وسلم.

أما بعد :

हर प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जो समस्त प्रकार की प्रशंसा का योग्य है। और मैं साक्ष्य (गवाही) देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजित नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। तथा मैं साक्ष्य (गवाही) देता हूँ कि मुहम्मद (ﷺ) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके भक्त और संदेशवाहक हैं, अल्लाह तआला आप पर

और आप के संतान तथा सहयोगियों पर कृपा और शांति अवतरित करे।

हृदय का आनन्द और हर्ष व उल्लास, शोक और चिन्ता-मुक्ति प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य और उद्देश्य है। इसी के द्वारा सुखित और शुभ जीवन प्राप्त होता है, तथा आनन्द और प्रसन्नता सम्पूर्ण होती है। इसके कुछ धार्मिक कारण, कुछ प्राकृतिक कारण और कुछ व्यवहारिक कारण हैं। और यह समस्त कारण केवल मोमिनों (इस्लाम के अनुयायियों) के लिये ही एकत्र हो सकते हैं। किन्तु जो इनके अतिरिक्त लोग हैं यदि उन्हें किसी पक्ष और कारण से, जिसके लिये उनके बुद्धिमान अत्यन्त संघर्ष करते हैं, प्राप्त भी हो जाये तो अनेक अधिक लाभदायक और स्थिर, तथा उत्तम दशा और बेहतर निष्कर्ष वाले कारणों से वंचित रहते हैं।

किन्तु मैं अपने इस लेख में इस सर्वोच्च उद्देश्य जिसके लिये प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न करता है, के केवल उन कारणों का उल्लेख कर रहा हूँ जो (इस समय) मेरे मस्तिष्क में उपस्थित हैं।

कुछ लोगों ने इन में से अधिकांश कारणों को प्राप्त कर लिया जिसके फलस्वरूप उन्होंने ने सुखी और मंगलमय जीवन व्यतीत की। तथा कुछ लोग इन समस्त कारणों की

प्राप्ति में विफल हो गये और फलतः उन्हें दुर्भाग्य और अशुभ जीवन व्यतीत करना पड़ा। और कुछ लोग अपनी सामर्थ और शक्ति के अनुसार इन दोनों के मध्य हैं। और अल्लाह तआला ही शक्ति प्रदान करने वाला और प्रत्येक भलाई की प्राप्ति तथा प्रत्येक बुराई को दूर करने पर सहायक है।

आध्याय

{ ईमान और पुण्य कार्य }

1. शुभ जीवन का सबसे महान कारण और उसका मूल आधार ईमान (विश्वास) और पुण्य कार्य है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيَاةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ﴾ [النحل: ११७].

“जिस पुरुष अथवा स्त्री ने भी पुण्य कार्य किया और वह मोमिन हो, तो हम उसे शुभ जीवन प्रदान करेंगे और जो कुछ वह करते थे हम उन्हें उसका उत्तम प्रतिफल देंगे।”

(सूरतुन-नह्ल: ६७)

इस आयत में अल्लाह तआला ने यह सूचना और वचन दिया है कि वह ईमान तथा पुण्य कार्य करने वालों को इस

संसार में शुभ जीवन तथा इस संसार और प्रलय (सदैव रहने वाले जीवन) में अच्छे प्रतिफल से सम्मानित करेगा।

इसका कारण स्पष्ट है : क्योंकि अल्लाह तआला पर शुद्ध (वास्तविक), पुण्य कार्य का लाभ प्रदायक और हृदयों, चरित्र और लोक व प्रलोक का सुधार करने वाला ईमान रखने वालों के पास ऐसे आधार और सिद्धान्त होते हैं जिनमें वह अपने ऊपर घटने वाले समस्त प्रकार के हर्ष व आनन्द के कारणों, तथा दुख, चिन्ता, शोक और व्याकुलता के कारणों का स्वागत (सामना) करते हैं।

प्रसन्नता जनक और आनन्दकर चीजों का स्वागत उसकी स्वीकृति, उस पर आभार प्रदर्शन और उसको लाभदायक चीजों में प्रयोग करके करते हैं। जब वह उसका प्रयोग इस प्रकार करते हैं तो उन्हें उस पर प्रसन्नता, उस में स्थिरता और बढ़ोतरी (बरकत) की लालसा और कृतज्ञों के प्रतिफल की आशा से ऐसी महान चीजों का अनुभव होता है जिसकी अच्छाईयां और बरकतें इन प्रसन्नताओं से बढ़कर होती हैं जो कि उसका प्रतिफल है।

तथा घृणित, अप्रिय और हानिकारक चीजों तथा शोक और चिन्ता का सामना उसका प्रतिरोध करके करते हैं, जिसका प्रतिरोध उनके लिये सम्भव है, और जिस को वह हल्का कर सकते हैं उसका सामना उसे हल्का करके करते हैं,

और जिस पर उनका बस नहीं चलता है उस पर सदृढ़ रूप से धैर्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप उन्हें घृणित (अप्रिय) चीज़ों के प्रभावों से लाभदायक प्रतिरोध, अनुभव, शक्ति, धैर्य और पुण्य की इच्छा से ऐसी महान चीज़ें प्राप्त होती हैं जिसके साथ समस्त घृणित और अप्रिय चीज़ें समाप्त हो जाती हैं और उसका स्थान प्रसन्नताएँ, शुभ कामनाएँ (आशाएँ) तथा अल्लाह की अनुकम्पा और उसके पुण्य की आशा गृहण कर लेती है। जैसा कि नबी ﷺ ने सहीह हदीस में इसका विवरण करते हुये फरमाया:

((عجا لأمر المؤمن إن أمره كله خير، إن أصابته
سراء شكر فكان خيراً له، وإن أصابته ضراء صبر
فكان خيراً له، وليس ذلك لأحد إلا للمؤمن))

[رواه مسلم.]

मोमिन (अल्लाह तआला पर विश्वास रखने वाला) का मामला बड़ा अनोखा है कि उसके प्रत्येक मामले में भलाई है, यदि उसे प्रसन्नता प्राप्त होती है और वह उस पर आभार प्रकट करता है तो यह उसके लिये भला होता है, और यदि उसे कोई शोक (कष्ट) पहुंचता है जिस पर वह

धैर्य से काम लेता है तो यह उसके लिये भला होता है, और यह विशेषता केवल मोमिन ही को प्राप्त है। (मुस्लिम)

उक्त हदीस में आप ﷺ ने इस बात की सूचना दी है कि मोमिन का उपहार, उसकी भलाई और उसके कर्मों का प्रतिफल उस पर घटने वाली समस्त प्रकार की प्रसन्नताओं और अप्रसन्नताओं में कई गुना बढ़ जाता है।

इसी लिए आप दो व्यक्तियों को पायें गे कि उनके साथ कोई शुभ अथवा अशुभ घटना घटती है तो उसका स्वागत (सामना) करने में उनके मध्य व्यापक अन्तर पाया जाता है, और यह अन्तर उन दोनों के ईमान और पुण्य कार्य में अन्तर के अनुसार होता है।

इन दोनों विशेषताओं (ईमान और अमल सालेह) से सुसज्जित व्यक्ति भलाई और बुराई का सामना पूर्व वर्णित कृतज्ञता और धैर्य तथा उनसे संबंधित चीजों के साथ करता है, जिस से उसके अन्दर हर्ष और आनन्द उत्पन्न होता है, और उसका शोक, चिन्ता, दुख, व्याकुलता, सीने की तंगी और जीवन की दुर्भाग्यता समाप्त हो जाती है, और उसे इस संसार में सम्पूर्णता शुभ जीवन प्राप्त होती है।

और दूसरा व्यक्ति हर्ष और उल्लास की चीजों का स्वागत घमण्ड, गर्व और अहंकार के साथ करता है, जिसके कारण वह दुश्चरित्र हो जाता है और चौपायों के समान उसे लालसा और घबराहट के साथ प्राप्त करता है, इसके उपरान्त उसका हृदय सुखमय नहीं रहता है, बल्कि अनेक पक्षों से वह परेशान और टूटा हुआ होता है, अपनी प्रिय वस्तुओं के नष्ट हो जाने के भय के पक्ष से, बहुल अवरोधकों (प्रतिरोधों) के कारण जो अधिकतर उसी से जन्म लेते हैं, और इस दृष्टि से भी कि हृदय किसी एक सीमा पर नहीं ठहरते हैं, बल्कि नित्य अन्य चीजों के लिये प्रलोभित और अभिलाषी रहते हैं, जो कभी प्राप्त हो जाते हैं और कभी प्राप्त होने से रह जाते हैं, और यदि मान लिया जाये कि प्राप्त भी हो जायें, तब भी वह उपरोक्त वर्णित पक्षों से व्याकुल रहता है।

तथा अप्रिय और अप्रसन्न चीजों का सामना व्याकुलता, भय, तंगदिली और बेचैनी के साथ करता है, इसके फलस्वरूप वह जिस जीवन की दुर्भाग्यता और मानसिक तथा आसाबी बीमारियों से ग्रस्त होता है उसके विषय में मत पूछिये, और वह ऐसे भय से पीड़ित होता है जो उसे अत्यन्त बुरी दशा तक पहुंचा देता है और उसके लिये गम्भीर रूप से कष्टदायक बन जाता है ; क्योंकि वह

प्रतिफल (बदले) की आशा नहीं रखता और न ही उसके पास धैर्य होता है जो उसका ढारस बंधा सके और उसके शोक को कम कर सके।

अनुभव इन सारी चीज़ों का साक्षी (शाहिद) है, और इस प्रकार के किसी एक उदाहरण पर यदि आप चिन्तन करें और उसे लोगों की दशाओं पर फिट करें, तो आप उस मोमिन के मध्य जो अपने ईमान के तकाज़े के अनुसार कार्य करने वाला है तथा उस व्यक्ति के मध्य जो ऐसा नहीं है, व्यापक अन्तर पायेंगे। और वह यह कि अल्लाह की प्रदान की हुई जीविका और उसकी ओर से बन्दों (लोगों) को प्राप्त होने वाली कृपा और भिन्न प्रकार की अनुकम्पा पर संतुष्टि करने पर धर्म अत्यन्त बल देता है।

अतः जब मोमिन किसी बीमारी या दरिद्रता, अथवा इसी प्रकार की अन्य चीज़ों से जिसका प्रत्येक व्यक्ति निशाना बन सकता है, ग्रस्त होता है तो आप उसे उसके ईमान (विश्वास) और अल्लाह की आबंटित भाग्य पर उसकी स्वीकारता और सन्तुष्टि के कारण उसकी आँख को ठण्डी पायेंगे, वह अपने हृदय से ऐसी चीज़ की याचना नहीं करता है जो उसके भाग्य में नहीं है, वह अपने से निम्न वर्ग को देखता है, अपने से उच्च वर्ग को नहीं देखता है,

और कभी कभार उसका हर्ष व उल्लास और सुख चैन उस व्यक्ति से भी बढ़ जाता है जो समस्त सांसारिक लक्ष्यों से लाभान्वित हो, किन्तु उसके पास सन्तुष्टि न हो।

इसी प्रकार वह व्यक्ति जो ईमान के अनुकूल कार्य नहीं करता है, जब थोड़ी सी निर्धनता से पीड़ित होता है, अथवा कुछ सांसारिक आकांक्षाएँ उसे प्राप्त होने से रह जाती हैं, तो आप उसे अत्यन्त शोक और दुर्भाग्यता में ग्रस्त पायेंगे।

एक दूसरा उदाहरण: जब भय के कारण उत्पन्न होते हैं और मनुष्य पर कष्टदायक और चिन्ताजनक चीजों का आक्रमण होता है तो आप शुद्ध ईमान वाले व्यक्ति को इस अवस्था में पायेंगे कि उसका हृदय स्थिर और आश्वस्त है, वह इस पेश आने वाली विपत्ति का उपाय करने और उसे चलता करने पर अपने विचार, वचन और कर्म के द्वारा सामर्थी है, उसने अपने आप को इस आक्रामक कष्टदायक चीज़ के अनुकूल बना लिया है। ये ऐसी अवस्थाएँ हैं जो मनुष्य को सुख और चैन प्रदान करती हैं और उसके हृदय को स्थिर और सदृढ़ कर देती हैं।

दूसरी ओर ईमान रहित (बे-ईमान) व्यक्ति को इसके अत्यन्त विपरीत पायेंगे, जब भयानक चीज़ें उत्पन्न होती हैं तो उन से उसका ज़मीर हिल उठता है (उसकी आत्मा

बेचैन हो जाती है), उसके आसाब (पट्टे) तनाव ग्रस्त हो जाते हैं, उसके विचार परागंदा हो जाते हैं, उसके भीतर भय और दबदबा समा जाता है, और उस पर बाहरी भय और आंतरिक व्याकुलता एकत्र हो जाती है जिसके तथ्य का वर्णन करना असम्भव है।

इस प्रकार के लोग यदि उन्हें कुछ प्राकृतिक कारण प्राप्त न हो जाये जिसके लिये अधिक अभ्यास की आवश्यकता होती है, तो उनकी शक्तियाँ नष्ट होजायें और उनके पट्टे तनाव पूर्ण हो जायें और यह इस लिए कि उनके पास वह ईमान (विश्वास) नहीं होता है जो उन्हें धैर्य (सहनशीलता) पर उभारे, विशेषकर कठिन स्थानों तथा शोकजनक और कष्टदायक हालतों में।

इस प्रकार सदाचारी और दुराचारी, मोमिन (आस्तिक) और काफिर (नास्तिक) उपार्जित वीरता की प्राप्ति और उस स्वभाव (प्रकृति) में दोनों साझीदार होते हैं जो शंकाओं, भय और डर को न्यून और शमन कर देता है।

किन्तु मोमिन को अपने ईमान की शक्ति, अपने धैर्य और अल्लाह पर भरोसा व तवक्कुल, और उसके पुण्य और प्रतिफल की इच्छा और अभिलाषा के कारण इतनी श्रेष्ठता प्राप्त होती है कि जिसके फलस्वरूप उसकी वीरता बढ़ जाती है, उसके भय की तीव्रता को कम कर देती है और

उसकी कठिनाईयों को सरल बना देती है। जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿إِنْ تَكُونُوا تَأْمُونًا فَإِنَّهُمْ يَأْمُونُ كَمَا تَأْمُونُ
وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ﴾ [النساء: १०६].

“यदि तुम्हें कष्ट होता है, तो उन्हें भी कष्ट होता है, और तुम अल्लाह से वह आशाएं रखते हो जो आशाएं वह नहीं रखते।” (सूरतुन-निसा: १०४)

और उन्हें अल्लाह तआला की सहायता, उसके विशेष स्रोत तथा उसके सहयोग से वह चीज़ें प्राप्त होती हैं जो भय और शंकाओं को नष्ट कर देती हैं। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿وَأَصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ﴾ [الأَنْفَال: ६].

“तथा धैर्य से काम लो, निःसन्देह अल्लाह तआला धैर्यवानों के साथ है।” (सूरतुल-अनफाल: ४६)

२- उन्हीं कारणों में से जो शोक, दुख और व्याकुलता का निवारण करते हैं: मनुष्य के साथ कथन, कर्म और अनेक प्रकार की भलाईयों के द्वारा उपकार करना है। यह सारी चीजें भलाई और उपकार हैं, इसी के द्वारा अल्लाह तआला सदाचारियों तथा दुराचारियों से शोक और दुख को उनके उपकार के अनुसार दूर करता है, किन्तु मोमिन को इसका सम्पूर्ण भाग प्राप्त होता है। और उसे अन्य लोगों पर यह विशेषता प्राप्त होती है कि उसका उपकार इख्लास (निःस्वार्थता) और उसके पुण्य की आशा के साथ जारी होता है, फलतः अल्लाह तआला उसके लिए भलाई का कार्य करना सरल बना देता है क्योंकि उसे भलाई की आशा होती है, तथा उसके इख्लास (निःस्वार्थता) और पुण्य की इच्छा के कारण उससे अप्रिय और घृणास्पद चीजों को टाल देता है। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا﴾ [النساء: ११६]

“उनकी अधिकांश कानाफूसी में कोई भलाई नहीं, परन्तु जो दान-पुण्य अथवा भलाई का अथवा लोगों के बीच सुधार कराने का आदेश दे, तथा जो व्यक्ति यह कार्य

केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए करे, हम उसे अवश्य बहुत बड़ा प्रतिफल (बदला) देंगे।”

(सूरतुन-निसा:99४)

उक्त आयत में अल्लाह तआला ने यह सूचना दी है कि यह समस्त चीजें जिस से भी जारी हुई हैं वह ख़ैर और भलाई हैं, और भलाई, भलाई को जन्म देती है, और बुराई को टालती है, तथा पुण्य की इच्छा और आशा के साथ कार्य करने वाले मोमिन को अल्लाह तआला बहुत बड़ा प्रतिफल देगा, और महान प्रतिफल में से दुख, शोक, चिन्ता और खेद इत्यादि का निवारण और समाप्ति भी है।

आध्यात्म

३-मांसपेशियों के तनाव और हृदय के कुछ कष्टदायक और दुखदायी चीज़ों में लीन होने के कारण उत्पन्न होने वाली व्याकुलता और क्लेश को टालने के कारणों में से : किसी कार्य या किसी लाभदायक ज्ञान में व्यस्त होना है, क्योंकि ऐसा करने से उसका हृदय उस चीज़ में व्यस्त होने से निश्चेत हो जाता है जो उसकी व्याकुलता का कारण बनी है, और सम्भवतः वह इसके कारण उन कारणों को भूल जाता है जो उसके लिए शोक और खेद का कारण बने हैं, तथा उसका हृदय हर्षित होजाता है, उसकी स्फूर्ति बढ़ जाती है, और यह कारण भी मोमिन और ग़ैर-मोमिन सब को सम्मिलित है, किन्तु मोमिन को अपने विश्वास (ईमान) और इख़्लास तथा जिस ज्ञान को सीखने या सिखाने में वह व्यस्त है उस में अल्लाह तआला के पास पुण्य की आशा के कारण, उसे विशेषता प्राप्त होती है। और उसे जिस भलाई का ज्ञान होता है उसे करता है, यदि वह उपासना है तो उसकी गणना उपासना में है, और यदि वह कोई सांसारिक कर्म अथवा सांसारिक आदत (अभ्यास) है तो उस में शुद्ध नियत को

सम्मिलित कर लेता है, तथा उसके द्वारा अल्लाह तआला की आज्ञापालन पर सहायता की इच्छा रखता है।

चुनांचे शोक, चिन्ता, खेद और दुख दर्द के निवारण में इसका तीव्र प्रभाव पड़ता है, कितने ही ऐसे लोग हैं जो व्याकुलता, शोक और नित्य मनस्ताप से पीड़ित हुये, तो उन पर विभिन्न प्रकार की बीमारियों का पहाड़ टूट पड़ा, ऐसी स्थिति में उसकी सफल दवा यह सिद्ध हुई कि: उन्होंने ने उस कारण को भुला दिया जो उनके शोक, चिन्ता और मनस्ताप का कारण बना था, और किसी महत्वपूर्ण कार्य में व्यस्त हो गये।

और उचित यह है कि वह ऐसे काम में व्यस्त हो जिस से हृदय को लगाव हो और वह उसका अभिलाषी (उत्सुक) हो ; क्योंकि यह इस लाभदायक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये अधिक सम्भावित (योग्य) है, और अल्लाह तआला अधिक ज्ञान रखने वाला है।

४-शोक चिन्ता और व्याकुलता को दूर करने का एक उपाय यह भी है कि : समस्त सोच और विचार को केवल वर्तमान दिन के काम पर एकत्र कर दिया जाये, और अपने विचार को भविष्य काल के विषय में चिन्ता करने

और भूत काल पर खेद प्रकट करने से काट दिया जाये। इसी कारण नबी ﷺ शोक, चिन्ता और खेद से अल्लाह तआला का शरण मांगा करते थे (जैसा कि उस हदीस में है जिसे बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है), “हुज़्न्” अर्थात् शोक और दुख बीती हुई चीज़ों पर होता है जिनका लौटाना और छतिपूर्ति करना असम्भव होता है। और “हम्म” अर्थात् खेद और मनस्ताप भविष्य में किसी चीज़ से भय के कारण उत्पन्न होता है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह वर्तमानवादी बना रहे (भविष्य की चिन्ता न करे), अपना सम्पूर्ण प्रयास और संघर्ष अपने वर्तमान समय और दिन को सुधारने में व्यय करे ; क्योंकि उस पर हृदय को जमाना कार्यों की पूर्ति का कारण है, और उसके द्वारा मनुष्य शोक और खेद से तसल्ली (सांत्वना, ढारस) प्राप्त करता है।

नबी ﷺ जब कोई दुआ (प्रार्थना) करते या अपनी उम्मत को किसी दुआ का निर्देश देते तो आप ﷺ -अल्लाह तआला से सहायता मांगने और उसकी अनुकम्पा की आशा रखने के साथ साथ- जिस चीज़ की प्राप्ति के लिये वह दुआ करता था उसकी प्राप्ति को निश्चित बनाने, तथा जिस चीज़ को टालने के लिए दुआ करता था उसे परित्याग करने में प्रयास, संघर्ष और उद्यम करने पर

उभारते और बल देते थे ; क्योंकि प्रार्थना, कार्य के साथ होती है (होनी चाहिये), अतः बन्दे को चाहिए कि उन चीजों के लिए प्रयास करता रहे जो उस के लिए लोक और प्रलोक में लाभकारक हों, और अपने पालनहार से अपने उद्देश्य की सफलता के लिये याचना करे, और उस पर अल्लाह तआला से सहायता मांगे। जैसा कि आप ﷺ का फरमान है:

((أحرص على ما ينفعك واستعن بالله ولا تعجز،
 وإذا أصابك شيء فلا تقل: لو أني فعلت كذا،
 كان كذا وكذا، ولكن قل: قدر الله وما شاء فعل،
 فإن لو تفتح عمل الشيطان)) [رواه مسلم].

“अपनी लाभ की चीजों के इच्छुक बनो, अल्लाह तआला से सहायता मांगो और विवशता प्रकट न करो (बेबस होकर न बैठो)। यदि आप को कोई विपत्ति पहुंचे तो यह न कहो कि: यदि मैं ऐसा किया होता तो ऐसा और ऐसा होता। बल्कि यह कहो कि: (قَدَرُ اللَّهِ وَمَا شَاءَ فَعَلَ) अल्लाह तआला ने ऐसा ही भाग्य में लिख रखा था और वह जो चाहे करे ; क्योंकि ‘यदि’ (अगर) शैतान के कार्य का द्वार खोलता है।” (मुस्लिम)

उक्त हदीस में आप ﷺ ने दो चीज़ों को एकत्र कर दिया है : प्रत्येक अवस्था में लाभदायक चीज़ों का इच्छुक और लालसी होना, अल्लाह तआला से सहायता मांगना और विवशता का शिकार न होना जो कि हानिकारक आलस्य है। तथा बीती हुई घटित चीज़ों के सामने आत्मसमर्पण करना और अल्लाह तआला की आज्ञां और भाग्य का मुशाहदा करना।

तथा समस्त चीज़ों का दो भाग किया है : एक भाग वह है जिसका प्राप्त करना अथवा उस में से सम्भावित चीज़ का प्राप्त करना, या उसको टालना अथवा उसको कम (न्यून) करना मनुष्य के लिए सम्भव है, ऐसी चीज़ों में व्यक्ति अपना प्रयास और संघर्ष जारी रखे गा और अपने माबूद (पूज्य) से सहायता मांगे गा। और दूसरा भाग वह है जिस में यह सब सम्भव नहीं है, ऐसी चीज़ों के प्रति आदमी सन्तुष्टि, प्रसन्नता तथा स्वीकृति व्यक्त करेगा। और इस में कोई सन्देह नहीं कि इस नियम का विचार (रिआयत) करना आनन्द की प्राप्ति, तथा शोक और खेद की समाप्ति का कारण है।

आध्यात्म

५- प्रफुल्लता और संतोष के महान कारणों में से : ((अधिक से अधिक अल्लाह तआला का ज़िक्र (स्मरण) करना)) भी है ; क्योंकि प्रफुल्लता और संतोष, तथा शोक और चिन्ता के निवारण में इसका अनोखा (अनूठा) प्रभाव पड़ता है। अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ﴾ [الرعد : २८].

“याद रखो अल्लाह के स्मरण (ज़िक्र) से ही दिलों को संतुष्टि प्राप्त होती है।” (सूरतुर-रअद : २८)

अल्लाह के ज़िक्र का इस उद्देश्य की प्राप्ति में व्यापक प्रभाव है ; उसके ज़िक्र की विशेषता के कारण और इस कारण भी कि बन्दे को उस के पुण्य और बदले की आशा होती है।

६- इसी प्रकार अल्लाह तआला की ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) और बातिनी (प्रोक्ष) नेमतों (उपहारों और अनुकम्पाओं) का वर्णन और चर्चा करना भी है। क्योंकि उसकी नेमतों को जानने व पहचानने और उनका वर्णन और चर्चा करने से

अल्लाह तआला शोक और खेद को टाल देता है, और यह बन्दे को शुक्र (कृतज्ञता) पर उभारती और प्रेरित करती है जो कि सब से ऊंचा और सर्वश्रेष्ठ पद है, यहाँ तक कि यदि बन्दा निर्धनता या बीमारी की दशा या इनके अतिरिक्त भिन्न प्रकार की विपत्तियों में ग्रस्त ही क्यों न हो। क्योंकि जब वह अल्लाह तआला की अनगिन्त और असंख्य नेमतों और उपकारों के बीच, तथा उसको जो आपत्ति पहुंची है उसके बीच तुलना करता है तो नेमतों की अपेक्षा आपत्ति का कोई अनुपात नहीं होता।

अपितु अल्लाह अताला जब बन्दे का अप्रिय और घृणास्पद चीजों तथा विपत्तियों के द्वारा परीक्षा करता है, और वह (बन्दा) उस में धैर्य, प्रसन्नता और स्वीकृति का कर्तव्य पूरा करता है, तो उसका बल (तीव्रता) कम होजाता है, उसका भार (बोझ) हल्का होजाता है, और आदमी का उसके पुण्य और प्रतिफल का विचार करना और धैर्य तथा प्रसन्नता के कर्तव्य को पूरा करते हुये अल्लाह तआला की इबादत (उपासना) करना, कटु और कड़वी (अप्रिय) चीजों को मधुर बना देता है, और उसके प्रतिफल की मधुरता उसके धैर्य की कटुता और कड़वाहट को मिटा देती है।

७- इस स्थान पर सर्वाधिक लाभदायक चीजों में से: उस निर्देश का प्रयोग भी है जिसको नबी ﷺ ने सहीह हदीस के अन्दर बतलाया है, आप ﷺ ने फरमाया:

((انظروا إلى من هو أسفل منكم ولا تنظروا إلى من هو فوقكم؛ فإنه أجدر أن لا تزدروا نعمة الله عليكم))

[رواه البخاري ومسلم].

“जो व्यक्ति तुम से नीचे (कमतर) हो उस को देखो, उस व्यक्ति को न देखो जो तुम से ऊंचा (उत्तम और श्रेष्ठ) हो, क्योंकि ऐसा करना इस बात के अधिक योग्य है कि तुम अपने ऊपर अल्लाह तआला की नेमतों और उपकारों का अपमान न करो।” (बुखारी और मुस्लिम)

क्योंकि जब मनुष्य इस महान दृष्य को अपनी आँखों के सामने रखे गा, तो वह स्वयं को शान्ति और उस से संबंधित चीजों में, तथा जीविका और उस से संलगित चीजों में बहुत लोगों से उत्तम और श्रेष्ठ पाये गा, यद्यपि उसकी दुर्दशा कैसी भी हो, इस प्रकार उसकी व्याकुलता, शोक और खेद समाप्त हो जाता है, और अल्लाह तआला की उन नेमतों पर उसकी प्रसन्नता तथा हर्ष और उल्लास बढ़ जाता है जिस में उसे अपने अतिरिक्त दूसरे उन

लोगों पर विशेषता और श्रेष्ठता प्राप्त है जो उसमें उस से कमतर हैं।

और जितना ही अधिक मनुष्य अल्लाह तआला की ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) और बातिनी (प्रोक्ष), सांसारिक और धार्मिक नेमतों और अनुकम्पाओं में चिंतन और विचार करेगा, वह देखे गा कि उसके प्रभु ने उसे बहुत अधिक भलाई और कल्याण प्रदान किया है और उस से अनेक बुराईयों (दुष्टियों) को दूर कर दिया है। और निःसन्देह यह शोक और खेद को समाप्त कर देता है और प्रसन्नता और आनन्द का कारण बनता है।

आध्याय

८- आनन्द प्रदान करने वाले तथा शोक और खेद को समाप्त करने वाले कारणों में से : शोक और खेद को उत्पन्न करने वाले कारणों के निवारण तथा आनन्द उत्पन्न करने वाले कारणों की प्राप्ति के लिये संघर्ष और प्रयास करना भी है, और वह इस प्रकार कि आदमी अपने ऊपर बीती हुई उन अप्रिय और घृणास्पद चीजों को भुला दे जिनका लौटाना सम्भव नहीं है, और इस बात से अवगत हो जाए कि ऐसी चीजों के विषय में चिंता करना निरर्थक और असम्भव है, और ऐसा करना मूर्खता और पागलपन है। अतः ऐसी चीजों में चिंतन करने से अपने हृदय से संघर्ष करे, तथा भविष्य जीवन में जिस निर्धनता या भय या इनके अतिरिक्त अन्य अप्रिय चीजों के घटने की वह कल्पना कर रहा है उसके विषय में व्याकुल और चिंतित होने से अपने हृदय से संघर्ष करे। और वह इस बात को जान ले कि भविष्य में घटने वाली भलाईयाँ और बुराईयाँ, आशायें और वेदनायें (तकलीफें) अज्ञात हैं, और यह समस्त चीजें सर्वशक्तिवान और विज्ञाता (हिक्मत वाले) अल्लाह के हाथ में हैं, मनुष्य के हाथ में उन में से कोई भी चीज़ नहीं है सिवाय इस बात के कि वह उसकी

भलाईयों को प्राप्त करने और उसकी हानियों का निवारण करने का प्रयास करे। और बन्दे को यह बात जान लेना चाहिये कि यदि वह अपने भविष्य के विषय में व्याकुल होने से अपनी चिन्ता त्याग दे, और उसको सुधारने में अपने प्रभु (अल्लाह) पर भरोसा रखे और उस पर सन्तुष्ट होजाये, अगर वह ऐसा कर लेगा तो उसका हृदय सन्तुष्ट हो जाये गा, उसकी स्थिति सुधर जायेगी और उसकी व्याकुलता और शोक चिन्ता दूर हो जाये गी।

६- भविष्य की बातों को ध्यान में रखने में सर्वाधिक लाभकारक चीजों में से इस दुआ का प्रयोग है जिसके द्वारा नबी ﷺ प्रार्थना किया करते थे:

((اللهم أصلح لي ديني الذي هو عصمة أمري،
وأصلح لي دنيائي التي فيها معاشي، وأصلح لي
آخرتي التي إلیها معادي، واجعل الحياة زيادة لي في
كل خير، والموت راحة لي من كل شر)) [رواه مسلم] .

“ऐ अल्लाह मेरे लिए मेरे धर्म को सुधार दे जो कि मेरे मामले का बचाव है, और मेरे लिए मेरे संसार को सुधार दे जिसके अन्दर मेरी जीविका (रहन-सहन) है, और मेरे लिए मेरी आखिरत (प्रलोक) को सुधार दे जिसकी ओर

मुझे लौटना है, मेरे लिए जीवन को प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे, तथा मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक बुराई से मुक्ति का कारण बना दे।” (मुस्लिम)

इसी प्रकार आप ﷺ की यह दुआ भी है:

((اللهم رحمتك أرجو فلا تكلني إلى نفسي طرفة عين، وأصلح لي شأني كله، لا إله إلا أنت))

[رواه أبو داود بإسناد صحيح].

“ऐ अल्लाह ! मैं तेरी ही रहमत (कृपा) की आशा रखता हूँ, अतः तू मुझे एक पलक झपकने के बराबर भी मेरे नफ्स (आत्मा) के हवाले न कर, और मेरे लिए मेरे सारे कार्य सुधार दे, तेरे अतिरिक्त कोई (वास्तविक) उपास्य नहीं है। (इस हदीस को अबु दाऊद ने सहीह सनद के साथ रिवायत किया है)

जब बन्दा उपस्थित हृदय और सच्ची नियत के साथ यह दुआ करेगा जिसके अन्दर उसके धार्मिक और सांसारिक भविष्य की भलाई (सुधार और कल्याण) है, साथ ही साथ उसको साकार करने वाली चीज़ में संघर्ष करेगा, तो अल्लाह तआला उसके लिये उस चीज़ को साकार और सम्पन्न कर देगा जिसके लिये उसने दुआ की है, और

जिस की आशा की है और जिसके लिये कार्य किया है, तथा उसका शोक और चिन्ता, आनन्द और प्रसन्नता में परिवर्तित हो जाये गा।

आध्यात्म

१०- जब व्यक्ति विपत्ति ग्रस्त हो तो व्याकुलता, शोक और चिन्ता के निवारण के सर्वाधिक लाभदायक कारणों में से यह है कि उसको हल्का (निम्न) करने का प्रयास करे, और वह इस प्रकार कि मामले का अन्त जिन सम्भावनाओं पर होता है उन में से सब से दुष्ट सम्भावना का अनुमान लगाये, और उस पर अपने हृदय को तत्पर कर ले। यह करने के पश्चात उसे चाहिये कि यथासम्भव उस चीज़ को हल्का करने का प्रयास करे जिसका हल्का करना सम्भव हो। इस प्रकार इस तत्परता और लाभदायक प्रयास के द्वारा उसका शोक, चिन्ता और खेद समाप्त हो जायेगा, और उसका स्थान, लाभ प्राप्त करने तथा उन हानियों को दूर करने का प्रयास और संघर्ष ग्रहण कर लेगा जो मनुष्य के लिये उपलब्ध (या उसके बस में) है।

जब आदमी भय के कारणों, बीमारियों के कारणों और निर्धनता तथा अनेक प्रकार की प्रिय वस्तुओं की हीनता के कारणों से ग्रसित हो, तो उसे उन चीज़ों का सामना संतोष और उस पर, अपितु उस से भी अधिक कठोर सम्भावित चीज़ पर अपने हृदय को तत्पर करके करना चाहिए ; क्योंकि अप्रिय चीज़ों की सम्भावना पर हृदय को तैयार

करना उसको न्यून और कम कर देता है और उसकी तीव्रता को समाप्त कर देता है, विशेषकर जब वह यथाशक्ति अपने आप को उसके प्रतिरोध में व्यस्त कर दे, इस प्रकार उस के लिए लाभकारक प्रयास के साथ हृदय की तत्परता एकत्र हो जाती है जो उसके ध्यान को विपत्तियों के विषय में चिन्ता करने से हटा देती है, और वह अप्रिय चीजों का प्रतिरोध करने वाली अपनी शक्ति का नवीनीकरण करने पर अपने नफस से संघर्ष करता है, साथ ही साथ वह इन चीजों में अल्लाह तआला पर भरोसा और सुविश्वास रखता है।

इस में कोई सन्देह नहीं कि इन बातों का हर्ष व उल्लास और प्रफुल्लता की प्राप्ति में महान लाभ है, साथ ही आदमी सांसारिक और प्रालोकिक पुण्य और प्रतिफल की आशा रखता है, यह चीज़ मुशाहदा और अनुभव से सिद्ध है, और इसकी घटनायें, इसका अनुभव करने वालों के विषय में बहुत अधिक हैं।

आध्यात्म

११- हार्दिक बीमारियों, अपितु शारीरिक बीमारियों का सबसे महान उपचार : हृदय की शक्ति और उन भ्रमों और कल्पनाओं से व्याकुल और प्रभावित न होना है जिन्हें दुष्ट चिन्ताएं जन्म देती हैं। क्योंकि मानव जब भ्रमों के सामने आत्म समर्पण कर देता है और उसका हृदय प्रभावशाली चीजों जैसे कि बीमारियों इत्यादि के भय से, तथा कष्टदायक कारणों से घबराहट और क्रोध से, और अप्रिय चीजों के घटने तथा प्रिय चीजों के विनाश की सम्भावना से संकुचित हो जाता है, तो यह उसे शोक, चिन्ता, खेद, हार्दिक तथा शारीरिक बीमारियों और मांसपेशियों के पतन से ग्रसित कर देता है, जिसके अनेक दुष्ट प्रभाव सामने आते हैं जिसके बहुल्य हानियों का लोगों ने मुशाहदा किया है।

१२- और जब भी हृदय अल्लाह तआला पर भरोसा करता है, और उस पर आश्रय लगाता है, और भ्रमों के समक्ष आत्म समर्पण नहीं करता है और न ही दुष्ट विचारों का उस पर अधिकार होता है, और अल्लाह पर

विश्वास रखता है और उसकी अनुकम्पा की आशा रखता है, तो इसके कारण उसका शोक और चिन्ताएँ समाप्त होजाती हैं, और उसकी बहुत सी हार्दिक और शारीरिक बीमारियाँ दूर हो जाती हैं, और उसके हृदय को वह शक्ति, प्रफुल्लता और आनन्द प्राप्त होता है जिसका वर्णन करना असम्भव है। कितने ही हस्पताल भ्रमों और दुष्ट विचारों के रोगियों से भरे हुये हैं, कमजोरों की बात तो दूर, अधिकांश शक्तिशाली लोगों के दिलों पर भी इन बातों ने बहुत प्रभाव डाला है, और कितना ही मूर्खता और पागलपन का कारण बना है! और कुशल तथा स्वस्थ व्यक्ति वही है जिसे अल्लाह तआला शान्ति और कुशलता प्रदान करे और उसे अपनी आत्मा से संघर्ष करने का सामर्थ्य दे ताकि वह हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले तथा व्याकुलता का निवारण करने वाले लाभदायक कारणों को प्राप्त कर सके। अल्लाह तालास का फ़रमान है:

﴿وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾ [الطلاق: ३]

“और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआला उसके लिये पर्याप्त है।” (सूरतुत-तलाक: ३)

अर्थात: उसके लिये उसके धार्मिक और सांसारिक समस्त मामलों के लिए पर्याप्त है।

अल्लाह तआला पर भरोसा रखने वाले का हृदय शक्तिशाली होता है, उस पर भ्रमों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, और न ही घटनाएँ उसे व्याकुल करती हैं ; क्योंकि उसे ज्ञात होता है कि ऐसा आत्म निर्बलता, कायरता और उस भय के कारण है जिसकी कोई वास्तविकता नहीं है, इसके साथ ही साथ उसे यह भी ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने उस पर भरोसा रखने वाले के लिये सम्पूर्ण पर्याप्त (किफ़ायत) की ज़मानत (गारन्टी) ली है, अतः वह अल्लाह पर भरोसा रखता है और उसके वायदे पर विश्वस्त होता है, सो उसका शोक और व्याकुलता समाप्त होजाती है, और उसकी कठिनाई सरलता में, उसका शोक और खेद प्रसन्नता में और उसका भय शान्ति में परिवर्तित हो जाता है। अतः हम अल्लाह तआला से कुशलता की याचना करते हैं, और उससे यह प्रार्थना करते हैं कि वह हमें अपनी कृपा से हृदय की शक्ति और सम्पूर्ण तवक्कुल के साथ स्थिरता प्रदान करे जिसके पात्रों के लिये अल्लाह तआला ने प्रत्येक भलाई की, तथा प्रत्येक बुराई और हानि को दूर करने की गारण्टी दी है।

आध्याय

१३- नबी ﷺ के कथन :

(لا يضرك مؤمن مؤمنة، إن كره منها خلقا رضي منها خلقا آخر) (رواه مسلم).

“कोई मोमिन पुरुष किसी मोमिन स्त्री से कपट (द्वेष) न रखे, यदि उसका कोई स्वभाव उसे अप्रिय हो, तो उसके किसी दूसरे स्वभाव से वह प्रसन्न हो जायेगा।” (मुस्लिम)

के दो महान लाभ हैं:

प्रथम लाभ: इस बात की ओर मार्गदर्शन कि पत्नी, निकटवर्ती, साथी, सम व्यवहार, और प्रत्येक उस व्यक्ति जिसके और आपके मध्य कोई संबंध और नाता है, उसके साथ किस प्रकार का व्यवहार (मामला) किया जाये, और उचित है कि आप स्वयं को इस बात के अनुकूल कर लें कि उसके अन्दर दोष (अवगुण) अथवा अभाव या किसी ऐसी बात का पाया जाना आवश्यक है जो आप को अप्रिय है, अतः जब आप कोई ऐसी चीज़ पायें तो इसके मध्य और आप पर जो घनिष्ठ संबंध बनाए रखना तथा प्रेम को स्थिर रखना अनिवार्य अथवा उचित है, उसके मध्य तुलना

करें, उसके अन्दर जो सामान्य और प्रमुख विशेषताएं और उद्देश्य हैं उसको ध्यान में रखते हुये। इस प्रकार अवगुणों से उपेक्षा करके और गुणों को सामने रख कर संगत और संबंध सदैव स्थिर रहेगा, और सम्पूर्ण प्रसन्नता और आनन्द प्राप्त होगा।

दूसरा लाभ: शोक, चिन्ता और व्याकुलता का विनाश, विमलता व सत्यता की स्थिरता, ऐच्छिक और अनिवार्य अधिकारों की निरंतर पूर्ति और दोनों पक्षों के मध्य आनन्द का अनुभव। और जो व्यक्ति इससे मार्गदर्शन न प्राप्त करे जिसे नबी ﷺ ने वर्णन किया है, अपितु मामले को उलट दे और अवगुणों पर ध्यान रखे और गुणों और विशेषताओं से उपेक्षा करे (आँखें चुराए), तो ऐसा व्यक्ति अवश्य व्याकुल और शोक ग्रस्त होगा, और उसके और उससे संबंध रखने वाले व्यक्ति के मध्य जो प्रेम है वह मलिन हो जायेगा, और अधिकतर हुकूक (अधिकार) जिनकी रक्षा करना (निभाना) उनमें से प्रत्येक पर अनिवार्य है, टुकड़े टुकड़े (नष्ट) हो जायेंगे।

अधिकांश महान साहस वाले लोग विपत्तियों, दुर्घटनाओं और कष्टदायक चीजों के घटने के समय अपने आपको धैर्य और सन्तुष्टि पर तत्पर कर लेते हैं। किन्तु साधारण और तुच्छ चीजों पर व्याकुल और दुखी होजाते हैं, और

विमलता मलिन होजाती है। इसका कारण यह है कि उन्होंने ने बड़ी बड़ी चीजों के घटित होने पर अपने आपको तत्पर कर लिया, और छोटी छोटी चीजों के समय उसे छोड़ दिया। जिसके कारण उन्हें उससे हानि पहुँची और उनकी प्रसन्नता और आनन्द को प्रभावित किया। अतः बुद्धिमान व्यक्ति अपने आपको छोटी और बड़ी समस्त चीजों पर तत्पर करता है, और अल्लाह तआला से उस पर सहायता मांगता है, और उससे यह याचना करता है कि उसे पलक झपकने के समान भी उसके नफस (आत्मा) के हवाले न करे। उस समय उसके लिए छोटी छोटी चीजें सरल हो जायेंगी, जिस प्रकार कि उसके लिये बड़ी बड़ी चीजें सरल हो जाती हैं। और वह आत्मा की सन्तुष्टि और आश्वासन, कुशलता और आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करता है।

आध्याय

१४- बुद्धिमान यह जानता है कि उसका स्वस्थ जीवन, वैभवशाली और सन्तोष का जीवन है, और यह कि वह लघु जीवन है। इसलिए उसे शोक और मनस्ताप को समर्पित करके (और) लघु करना उचित नहीं है, क्योंकि यह स्वस्थ जीवन के विपरीत है। अतः वह अपने जीवन के साथ कृपणता (कंजूसी) करता है कि उसका अधिकांश भाग शोक, चिंताओं और मनस्ताप के भेंट न चढ़ जाए। इसमें सदाचारी और दुराचारी के बीच कोई अन्तर नहीं है, किन्तु एक मोमिन को इस गुण का अधिक प्याप्त भाग और लोक तथा प्रलोक में लाभदायक अंश प्राप्त होता है।

१५- तथा उसके लिए यह भी उचित और श्रेष्ठ है कि जब वह किसी अप्रिय (घृणित) चीज़ से पीड़ित हो या उससे भयभीत हो, तो वह परिशेष प्राप्त धार्मिक अथवा सांसारिक नेमतों (उपहारों) के बीच और उसे जो अप्रिय चीज़ पहुँची है उसके बीच तुलना करे। क्योंकि तुलना करते समय यह स्पष्ट हो जायेगा कि वह कितनी अधिक नेमतों में है, और वह जिस घृनास्पद और अप्रिय चीज़ से पीड़ित हुआ है वह शिथिल और हीन हो जायेगी।

इसी प्रकार उसे चाहिए कि जिस हानि से पीड़ित होने का उसे भय है उसके बीच और उस (हानि) से सुरक्षित रहने की अधिक सम्भावनाओं के बीच तुलना करे, और अल्प (दुर्बल) सम्भावना को अधिक और शक्तिशाली सम्भावनाओं पर ग़ालिब (विजयी) न होने दे। ऐसा करने से उसका शोक, चिन्ता और भय समाप्त हो जायेगा। और सबसे महान सम्भावना जिससे पीड़ित होने की उसे सम्भावना है उसका अनुमान लगाए, और यदि वह घटने वाली हो तो उसके घटने के लिए अपने आप को तत्पर कर ले, और उस में से जो अभी तक घटी न हो उसको टालने का प्रयास करे, तथा जो घट चुकी हो उसको हटाने अथवा उसको न्यून (कम) करने का प्रयत्न करे।

१६- लाभदायक बातों में से यह भी है कि आप यह ज्ञात कर लें कि लोगों का आप को कष्ट देना, और विशेषकर बुरी बातों (दुर्वचन तथा कटुभाषा) के द्वारा, आप के लिए हानिकारक नहीं है, अपितु इस से उन्हीं को हानि पहुँचती है, किन्तु यदि आप ने अपने आप को उसके विषय में चिन्ता करने में व्यस्त कर दिया, और उसे अपने जज़्बात (मनोभाव) पर अधिकार जमाने की अनुमति दे दी, तो उस समय आपके लिए यह उसी प्रकार हानिकारक सिद्ध होगी

जिस प्रकार उन्हें हानि पहुँचाया है, और यदि आप ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया तो आपको इस से कुछ भी हानि नहीं पहुँचेगी।

१७- आप यह बात भी जान लें कि आप का जीवन आपके विचारों के अधीन है, यदि आपके विचार ऐसे हैं जिसका लाभ धर्म अथवा संसार में आप पर लौटता है तो आपका जीवन सौभाग्य और वैभवशाली है, अन्यथा मामला इसके विपरीत है।

१८- शोक और चिन्ता को दूर भगाने के लिए सर्वाधिक लाभदायक चीजों में से यह भी है कि आप स्वयं को इस बात पर तत्पर कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से शुक्र (कृतज्ञता) की याचना (मांग) न करें, जब आप किसी व्यक्ति पर उपकार करें जिसका आप पर कोई अधिकार है अथवा उसका कोई अधिकार नहीं है तो आप यह ज्ञात कर लें कि आपका यह मामला (व्यवहार) अल्लाह के साथ है, इसलिए उस व्यक्ति की कृतज्ञता की चिन्ता न करें जिस पर आप ने उपकार किया है, जैसाकि अल्लाह तआला ने अपने प्रमुख बन्दों के विषय में फरमाया है:

﴿إِنَّمَا نَطْعُمُكُمْ لِيُوجِبَ اللَّهُ لَكُمْ جَزَاءً وَلَا

شُكُورًا﴾ [الإنسان: ٩]

“हम तो तुम्हें केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए खिलाते हैं, न तुम से प्रतिफल चाहते हैं न कृतज्ञता।” (सूरतुल-इन्सान: ९)

यह चीज़ परिवार जन तथा संतान (बाल बच्चों) और उन लोगों के साथ व्यवहार करने में जिनसे आप का घनिष्ठ संबंध है, अधिक निश्चित और अनिवार्य हो जाता है। अतः जब भी आप ने स्वयं को इन लोगों से दुष्ट और बुराई को दूर करने पर तत्पर कर लिया तो आप ने स्वयं को विश्राम पहुंचाया और सुखमयी हो गए।

सुख और शान्ति के कारणों में से गुणों को चुन लेना (अथवा गुणों से सम्मानित होना) तथा हार्दिक प्रभुत्व के साथ उस पर कार्य करना, बिना आडम्बर के जो आप को व्याकुल कर दे और आप गुणों को प्राप्त किए बिना अपने डगर पर असफल होकर लौट आयें ; क्योंकि आप टेढ़े मार्ग पर चले हैं। और यह बुद्धि और हिक्मत की बात है।

तथा आप अप्रिय और कष्टदायक चीज़ों में से स्वच्छ (प्रिय) और सुखमयी चीज़ों को चुन लें, इस प्रकार हर्ष

और आनन्द में वृद्धि होगी, और अप्रसन्नतायें समाप्त हो जायेंगी।

१६- लाभकारक चीजों को अपना उद्देश्य बनायें और उनकी पूर्ति के लिए कार्य करें, और हानिकारक चीजों की ओर ध्यान आकर्षित न करें, ताकि आप शोक और खेद उत्पन्न करने वाले कारणों से निश्चेत रहें, और आप महत्वपूर्ण कार्यों पर सुख और हृदय को एकाग्र करके सहायता प्राप्त करें।

२०- लाभदायक बातों में से : कार्यों को वर्तमान समय में निबटाना और भविष्य में उस से निश्चिन्त (निवृत्त) होना है; क्योंकि जब कार्यों को उसी समय निबटाया नहीं जायेगा तो आप पर पिछले शेष कार्य एकत्र हो जायेंगे, तथा उसके साथ आगामी कार्य भी सम्मिलित हो जायेंगे, जिसके कारण उसका भार बढ़ जायेगा, किन्तु जब आप प्रत्येक कार्य को उसके समय पर निबटा देंगे तो भविष्य कार्य पर विचार शक्ति और कार्य शक्ति के साथ ध्यान गमन हो सकेंगे।

२१- तथा आप के लिये उचित है कि लाभकारक कार्यों में से सब से अधिक महत्वपूर्ण कार्य का चयन करें (फिर उस से कम महत्व का), तथा जिस चीज़ की ओर आप के

हृदय का झुकाव हो और आप उस में अधिक रुचि रखते हों उस में (और उस के विपरीत में) अन्तर करें, क्योंकि उसका विपरीत उदासीनता, मलिनता, ग्लानि और अप्रसन्नता उत्पन्न करता है। और इस बात पर शुद्ध विचार तथा परामर्श द्वारा सहायता प्राप्त करें, क्योंकि परामर्श करने वाले को कभी पश्चात्ताप (पछतावा) नहीं होता, और जिस काम को आप करने की इच्छा रखते हों उसका बारीकी (सूक्ष्मता) के साथ गहन अध्ययन करें, फिर यदि मसलहत (हित, भलाई) निश्चित हो जाये और आप उस का संकल्प कर लें तो अल्लाह तआला पर सम्पूर्ण भरोसा रखें ; निःसन्देह अल्लाह तआला भरोसा रखने वालों को प्रिय रखता है।

والحمد لله رب العالمين، وصلي الله على سيدنا محمد وعلي
آله وصحبه وسلم.

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*

* atazia75@hotmail.com

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
लेखक का प्राक्कथन.....	३
शुभ जीवन के लाभदायक साधन (उपाय).....	६
१-ईमान और पुण्य कार्य (अमल सालेह).....	६
२-मनुष्य के साथ कथन, कर्म और अनेक प्रकार की भलाईयों के द्वारा उपकार करना.....	१५
३-किसी लाभदायक कार्य या लाभदायक ज्ञान में व्यस्त होना	१७
४-केवल वर्तमान दिन के काम पर ध्यान देना और भविष्य काल की चिन्ता न करना.....	१६
५-अधिक से अधिक अल्लाह तआला का जिक्र (स्मरण) करना.....	२२
६-अल्लाह तआला की जाहिरी (प्रत्यक्ष) और बातिनी (प्रोक्ष) नेमतों का वर्णन और चर्चा	

करना.....	२२
७-सांसारिक चीज़ों में अपने से नीचे आदमी को देखना.....	२४
८-बीती हुई घृणास्पद चीज़ों को भुलाकर, शोक और खेद को उत्पन्न करने वाले कारणों के निवारण के लिए प्रयास करना.....	२६
९-धर्म और लोक व प्रलोक के भलाई की प्रार्थना करना	२७
१० सब से दुष्ट सम्भावना का अनुमान लगाकर विपत्तियों को हल्का करना.....	३०
११-हृदय की शक्ति और उसका भ्रमों और कल्पनाओं से व्याकुल और प्रभावित न होना.....	३२
१२ अल्लाह तआला पर भरोसा और एतमाद करना.....	३२
१३-बुराई का बदला भलाई से देना	३५
१४-अप्रिय और घृणास्पद चीज़ों की तुलना नेमतों से करना	३८

१५-अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से शुक्र (कृतज्ञता) की याचना (मांग) न करना.....	३८
१६-कार्यों को वर्तमान समय में ही निबटा देना और भविष्य में उस से निवृत्त होना.....	३९
विषय सूची	४४